ମୁଣ୍ଡା ଜାଗାର୍ ଏଟେଃ ଉରୁମ୍
ମୁଣ୍ଡା ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା
मुंडा भाषा प्रवेशिका
MUNDA PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

ई–पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई–सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य–सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई–पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई–सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई–पाठशाला ePathshala के माध्यम से ई–सामग्री प्राप्त करें।

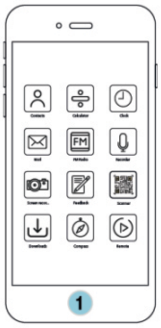
प्ले स्टोर से ई–पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें

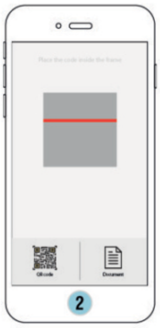
क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें

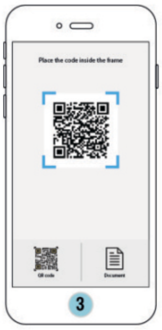
स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें

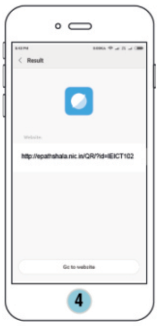
लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें

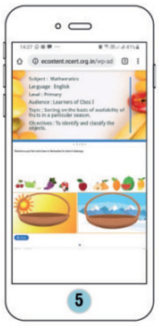
उपलब्ध ई–सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई–पाठशाला द्वारा ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई–सामग्री प्राप्त करें।

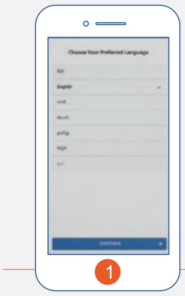
अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें

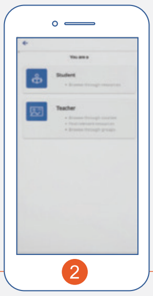
अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी

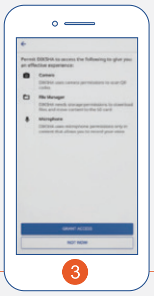
पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें

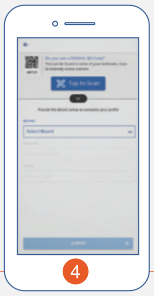
क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें

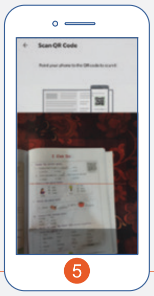
कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें

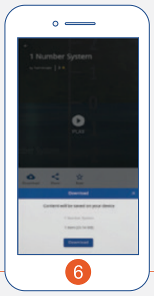
क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

ମୁଣ୍ଡା ଜାଗାର୍ ଏଟେଃ ଉରୁମ୍

ମୁଣ୍ଡା ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା

मुंडा भाषा प्रवेशिका

MUNDA PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education Ministry of Education, GOI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

ମୁଣ୍ଡା ଜାଗାର୍ ଏଟେଃ ଉରୁମ୍
ମୁଣ୍ଡା ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା
मुंडा भाषा प्रवेशिका
MUNDA PRIMER

A basal reader of Munda alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Sujoy Sarkar
Sudipta Bhattacharjee

ISBN: 978-81-977586-9-0

First Edition: December, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Saravanan A S
Cover Photo: Uttam Kumar Munda

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.sm@gov.in

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy

संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चो में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

124 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
124 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Telephone: +91-11-23382587, +91-11-23381104 Fax : +91-11-23387589
E-mail: secy.sel@nic.in

प्राक्कथन

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, संस्कृति का एक उपादान भी है। भाषा समुदाय की पहचान होती है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित भी करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है- एक ओर भारत की भाषिक विविधता एवं समृद्धि को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारत के संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं से संबंधित हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों- यह किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह सशक्त नींव न केवल भविष्य में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर) का लक्ष्य छोटे बच्चों या भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से परिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी।

शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

दिसंबर 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to ‘Viksit Bharat’. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ଭାରତ ଏକ ବହୁଭାଷୀ ଦେଶ ଯେଉଁଠାରେ ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ଅନେକ ଭାଷା କୁହାଯାଉଛି । ଆମେ ଆମ କଥୋପକଥନରେ ଏକାଧିକ ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କରୁ, ଯାହା ଆମକୁ ଏକଜୁଟ କରେ, ଆମକୁ ଆନନ୍ଦିତ କରେ; ଏହା ଆମ ଦେଶର ସାଧାରଣ ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ । ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷା ନୀତି (ଏନଇପି) ୨୦୨୦ ଏହି ଧାରଣାକୁ ଦୃଢ଼ତାର ସହ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦେଇଥାଏ । ଭାରତର ବହୁଭାଷୀ ବ୍ୟବସ୍ଥା ହେଉଛି ଏକ ବିଶାଳ ସମ୍ପଦ, ଯାହାକୁ ଦେଶର ସାମାଜିକ, ସାଂସ୍କୃତିକ, ଅର୍ଥନୀତିକ ଏବଂ ଶିକ୍ଷାଗତ ବିକାଶ ପାଇଁ ଦକ୍ଷତାର ସହ ବ୍ୟବହାର କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ରହିଛି । ଏହା ଶିକ୍ଷାକ୍ଷେତ୍ରରେ ପ୍ରତ୍ୟେକ ସ୍ତରରେ ବହୁଭାଷିକତାକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବାକୁ ପ୍ରେରିତ କରିଥାଏ ଯାହାଦ୍ୱାରା ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନେ ନିଜ ନିଜ ଭାଷାରେ ଅଧ୍ୟୟନ କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ସମସ୍ତ ଭାରତୀୟ ଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାଦାନ ଓ ଶିକ୍ଷଣ ସାମଗ୍ରୀ ସୃଷ୍ଟି ହେବାଦ୍ୱାରା ଏହି ବହୁଭାଷୀ ସମ୍ପଦ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ଯାହା 'ବିକଶିତ ଭାରତ' ପାଇଁ ପଥ ପ୍ରଶସ୍ତ କରିବ । ଏନଇପି ୨୦୨୦ ସହିତ ସମନ୍ୱୟ ରକ୍ଷାକରି ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଶ୍ରେଣୀର ଶିକ୍ଷଣ ସାମଗ୍ରୀ ବିକାଶ ପାଇଁ ଏକ ବ୍ୟାପକ ଏବଂ ସମନ୍ୱିତ ଆଭିମୁଖ୍ୟର ଆବଶ୍ୟକତା ରହିଛି ଯାହା ଭାରତର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଅଞ୍ଚଳର ଅନନ୍ୟ ଭାଷାଗତ ଏବଂ ସାଂସ୍କୃତିକ ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟକୁ ଦର୍ଶାଏ । ଏହି ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକାର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ହେଉଛି ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଶ୍ରେଣୀର ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ପଢ଼ିବା, ଲେଖିବାରେ ପାରଦର୍ଶିତା ପ୍ରଦାନ କରିବା, ସେମାନଙ୍କର ସୃଜନଶୀଳତା ତଥା ଆଲୋଚନାତ୍ମକ ଚିନ୍ତାଧାରାକୁ ବୃଦ୍ଧି କରିବା । ଏହି ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଶବ୍ଦର ଆରମ୍ଭ, ମଝି ଓ ଶେଷ ସ୍ଥାନରେ ଅକ୍ଷରର ବ୍ୟବହାର ଏବଂ ସେହି ଶବ୍ଦର ଏକ କିମ୍ବା ଏକାଧିକ ଅର୍ଥ ସହିତ ପରିଚିତ କରିବାକୁ ପ୍ରୟାସ କରାଯାଇଛି । ଶେଷରେ ସେହି ଅକ୍ଷରଗୁଡ଼ିକୁ ଅଭ୍ୟାସ କରି ଲେଖିବା ପାଇଁ ଉଦାହରଣ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଛି । ଏଥିରେ ଦିଆଯାଇଥିବା କବିତା ତଥା ଗୀତ ପିଲାମାନଙ୍କର ଭାଷା ବିକାଶ, ଜ୍ଞାନକୌଶଳ ଓ ସ୍ମରଣ ଶକ୍ତିକୁ ଉନ୍ନତ କରିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରିବ ।

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरू

दिसंबर 2024
मैसूरू

CIIL-NCERT Primer Series: Munda Primer Development Team

Guidance
Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors
Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru
Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Member Coordinators
Sujoy Sarkar, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru
Sanjaya Kumar Bag, Odia Lecturer, Eastern Regional Language Centre (ERLC), CIIL, Bhubaneswar

Resource Persons
Augustine Lugun, Retired Assistant Block Education Officer, Bargaon, Sundargarh
Sunil Dang, Asst. Teacher, Govt. Upper Primary School, Kunchpani, Koira, Sundargarh
Uttam Kumar Munda, Headmaster, Kahachuan Primary School, Rajgangpur, Jareikela, Sundargarh
Sushil Munda, Language Expert, Kardakudar, Kuliposh, Sundargarh
Sudipta Bhattacharjee, Senior Resource Person (SRP), Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Hilal Ahmad Dar, Junior Resource Person (JRP), SPPEL, CIIL, Mysuru

Odia Reviewer
Mohan Kar, Resource Person (Teaching), ERLC, CIIL, Bhubaneswar

Design Team
Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission (NTM), CIIL, Mysuru
Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ବହି ପଢ଼େଇବେ କିପରି

ମୁଣ୍ଡା ଜନଜାତି ଭାରତର ଅନ୍ୟତମ ପ୍ରାଚୀନତମ ଜନଜାତି ମଧ୍ୟରୁ ଅନ୍ୟତମ । ମୁଣ୍ଡା ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ ହେଉଛି ଗ୍ରାମର ମାଲିକ ବା ଗାଁ ମୁଖିଆ । ମୁଣ୍ଡା ଲୋକଙ୍କ ଭାଷା ହେଉଛି ଅଷ୍ଟ୍ରିକ ଭାଷା ପରିବାରର ଏକ ଶାଖା । ଓଡ଼ିଶାରେ ଏହି ଜନଜାତିର ସମୁଦାୟ ଜନସଂଖ୍ୟା ୩,୩୫,୮୩୦ । ଏହି ଜନଜାତି ଭାରତର ଝାଡ଼ଖଣ୍ଡ, ଛତିଶଗଡ଼, ଆସାମ, ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗ ଓ ମଧ୍ୟପ୍ରଦେଶ ଆଦି ରାଜ୍ୟରେ ବସବାସ କରନ୍ତି । ଏହା ବ୍ୟତୀତ ଓଡ଼ିଶାର ସୁନ୍ଦରଗଡ଼, ମୟୂରଭଞ୍ଜ, ଝାରସୁଗୁଡା, ଦେବଗଡ, ଅନୁଗୁଳ, ଯାଜପୁର, ଢେଙ୍କାନାଳ, କେଉଁଝର ଓ ସମ୍ବଲପୁର ଜିଲ୍ଲାରେ ମଧ୍ୟ ବସବାସ କରନ୍ତି । ମୁଣ୍ଡା ଜାତିର ନିଜସ୍ୱ ଭାଷା, ପରମ୍ପରା, ରୀତିନୀତି, ସାମାଜିକ ସଂସ୍କୃତି ଏବଂ ସଭ୍ୟତା ରହିଛି । ତାଙ୍କ ଭାଷାରେ ମଧୁରତା ଅଛି ଏବଂ ଶବ୍ଦଭଣ୍ଡାର ପୂରି ରହିଛି । ମୁଣ୍ଡା ଜନଜାତିର ଲୋକେ ସରଳ, ନିଷ୍କପଟ ତଥା ନିରୀହ ଭାବେ ପରିଚିତ । ଅନ୍ୟ ଜନଜାତିଙ୍କ ଭଳି ସେମାନେ ନିଜ ପର୍ବପର୍ବାଣି ନାଚଗୀତ, ସାଂସ୍କୃତିକ ଉତ୍ସବ ପାଳନ କରି ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ଜୀବନଯାପନ କରିଥାନ୍ତି । ମୁଣ୍ଡାଜାତିର ଲୋକମାନେ ସାଧାରଣତଃ ସେମାନଙ୍କର ଜୀବନ ଜୀବିକା ପାଇଁ କୃଷି ଓ ଜଙ୍ଗଲଜାତ ଦ୍ରବ୍ୟ ଉପରେ ନିର୍ଭର କରିଥାନ୍ତି । ସମ୍ପ୍ରତି ଶିକ୍ଷାର ଅଗ୍ରଗତି ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ସୁବିଧା ସୁଯୋଗ ଯୋଗୁଁ ଅନେକ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସେମାନେ ନିଜକୁ ନିଯୁକ୍ତି କରିପାରିଛନ୍ତି । ମୁଣ୍ଡାମାନେ ମାଗେ ପରବ, ସହରାଇ, ଏବଂ ବା ପରବ ପାଳନ କରିଥାନ୍ତି ।

ଭାରତର ନୂତନ ଶିକ୍ଷାନୀତି-୨୦୨୦ ତଥା ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖ-୨୦୨୨ ଅନୁସାରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ତିନିବର୍ଷରୁ ଆଠବର୍ଷ ଯାଏଁ ମାତୃଭାଷା, ଘରର ଭାଷା, ସ୍ଥାନୀୟ ଭାଷା ତଥା ଆଞ୍ଚଳିକ ଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାଦାନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ରହିଛି । ଭାରତର ଜନଜାତିବହୁଳ ଅଞ୍ଚଳରେ ସ୍କୁଲ ଶିକ୍ଷାଦାନର ଭାଷାକୁ ପିଲାମାନେ ବୁଝିପାରୁନଥିବା ହେତୁ ଶିକ୍ଷା ଓ ଶିକ୍ଷଣ ପ୍ରକ୍ରିୟାରେ ବିଭିନ୍ନ ସମସ୍ୟା ଦେଖାଯାଏ । ତେଣୁ କେନ୍ଦ୍ର ସରକାର ପିଲାଙ୍କୁ ବାଲ୍‌ବାଟିକାରୁ (ତିନିରୁ ପାଞ୍ଚ ବର୍ଷ) ଆଦ୍ୟ ସାକ୍ଷରତା (ପ୍ରଥମରୁ ଦ୍ୱିତୀୟ) ଯାଏଁ ମୌଳିକ ସାକ୍ଷରତାର ପ୍ରଚଳନ କରିଛନ୍ତି । ଏଥିପାଇଁ ସ୍ଥାନୀୟ ଗୀତ, ଗପ ଓ କଥୋପକଥନ ଜରିଆରେ ପ୍ରଥମେ ପିଲାଙ୍କ ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ କରି ସେମାନଙ୍କୁ ମୁଖର କରିବାକୁ ହେବ । ଏଥି ସହିତ ପିଲାଙ୍କର ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ, ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ, ପଢ଼ିବା ଓ ଲେଖିବା ଅଭ୍ୟାସ ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକ ଅନୁସାରେ କରାଯିବ ।

ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଶ୍ରେଣୀରୁ ତୃତୀୟ ଶ୍ରେଣୀଯାଏ ଜନଜାତି ପିଲାଙ୍କୁ ମାତୃଭାଷାରେ ପଢ଼ାଇଲେ ସେମାନଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ବିକାଶ ସହିତ ସୃଜନ ଓ କଳ୍ପନାଶକ୍ତି ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ । ମୁଣ୍ଡା ପିଲାମାନେ ଯେହେତୁ ଘରେ ଓଡ଼ିଆରେ କଥାବାର୍ତ୍ତା କରନ୍ତି ନାହିଁ, ତେଣୁ ସେମାନେ ସ୍କୁଲରେ ମଧ୍ୟ ଓଡ଼ିଆ ବହିର ପାଠ ବୁଝିବାରେ ଅସୁବିଧାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇଥାନ୍ତି । ଏହାର ମୂଳ କାରଣ ପିଲାଙ୍କୁ ମୌଳିକ ସାକ୍ଷରତା ସହିତ ପରିଚିତ କରାଯାଇ ନାହିଁ । ବାସ୍ତବରେ ଶ୍ରେଣୀରେ କିପରି ପିଲା ମାତୃଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଶିଖିବା ସହିତ ଓଡ଼ିଆରେ ପଢ଼ିଲେଖି ପାରିବେ, ତାହାର ଏକ ସାର୍ଥକ ପଦ୍ଧତି ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖ ୨୦୨୨ରେ ବିସ୍ତୃତ ଭାବେ ଦିଆଯାଇଛି । ପିଲା ପଢ଼ିଲେଖି ଶିଖିବା ପ୍ରଥମ କଥା । ଏଣୁ ଏହି ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକରେ ମୁଣ୍ଡା ଭାଷାର ସମସ୍ତ ଧ୍ୱନି, ବର୍ଣ୍ଣ ଓ ମାତ୍ରାକୁ ଆଧାର କରି ସେମାନଙ୍କ ସଂସ୍କୃତି ଓ ପରିବେଶରୁ ଶବ୍ଦ ସମ୍ପଦ ଦିଆଯାଇଛି ।

ବହୁଭାଷୀ ଶିକ୍ଷାର ଲକ୍ଷ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ଘରର ଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଆରମ୍ଭ କରି ରାଜ୍ୟ ଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଶିଖାଇବା । ଏହି ଦୃଷ୍ଟିରୁ ମୁଣ୍ଡା ଭାଷାରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ଏହି ପ୍ରବେଶିକା ମୁଣ୍ଡା ଭାଷାଭାଷୀ ଅଞ୍ଚଳର ଶିକ୍ଷକ ଓ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ନିଶ୍ଚିତ ଭାବେ ଉପାଦେୟ । ମୌଳିକ ସାକ୍ଷରତାର ଚାରିଗୋଟି ସୋପାନ ଅଛି । ସେଗୁଡ଼ିକ ହେଉଛି, କାହାଣୀ, ଗୀତ ଓ ଚିତ୍ରକୁ ନେଇ ପିଲାଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ଭାଷା ବିକାଶ କରିବା । ପିଲାଙ୍କୁ ବସ୍ତୁ ସଙ୍ଗେ ଶବ୍ଦର ସମ୍ପର୍କ ଚିହ୍ନାଇବା । ଶବ୍ଦର ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନିବା । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶବ୍ଦରେ ଥିବା ଅକ୍ଷରକୁ ପିଲା ଅଲଗା କରିବା । ଏହି ପ୍ରକ୍ରିୟା ପାଠ୍ୟଚର୍ଚ୍ଚାରେ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ, ଯାହା ଧ୍ୱନି ଓ ବର୍ଣ୍ଣର ସମ୍ପର୍କକୁ ବୁଝାଏ । ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ବହିଟିକୁ କିପରି ପଢ଼ାଇବେ ସେ ବିଷୟରେ ନିମ୍ନରେ ଉଲ୍ଲେଖ କରାଗଲା ।

ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ : ପିଲାଏ ଚିତ୍ର ଦେଖି ବସ୍ତୁର ନାମ କହିବେ ଓ ଶିକ୍ଷକ ପଚାରିବେ ଚିତ୍ରର ନାମ କେଉଁ ଧ୍ୱନିରୁ ଆରମ୍ଭ ହେଉଛି । ଯେମିତି 'ଅଡ଼ାଃ' ଚିତ୍ର ଦେଖି ତା'ର ପ୍ରଥମ ଧ୍ୱନି 'ଅ' ବୋଲି ପିଲା ଚିହ୍ନିବେ ।

ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ : ଶିକ୍ଷକ ପିଲାଙ୍କୁ ପ୍ରଥମେ ବୁଝାଇବେ 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣଟି କେମିତି ଦିଶୁଛି । ତାପରେ ଶବ୍ଦ ଭିତରୁ 'ଅ' ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନିବାକୁ କହିବେ । ତିନି ଚାରିଟି ଶବ୍ଦ ଭିତରୁ ପିଲାଏ 'ଅ' ଅକ୍ଷରର ଧ୍ୱନି ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବେ ଓ 'ଅ' ଅକ୍ଷରକୁ ଲେଖିବା ପାଇଁ ଅଭ୍ୟାସ କରିବେ ।

ପଢ଼ିବା : ପିଲାଏ ଚିତ୍ର ଦେଖି ନିଜ ଭାଷାର ଶବ୍ଦଟିକୁ କହିବେ । ସେହି ଶବ୍ଦକୁ ବାମରୁ ଡାହାଣକୁ ଆଙ୍ଗୁଠି ଲଗାଇ 'ଅଡ଼ାଃ' ପଢ଼ିବେ । ଅନ୍ୟ ଶବ୍ଦ ପଢ଼ି ସେହି ଶବ୍ଦର 'ଅ' କେଉଁଠି ଅଛି ପିଲାଏ ଚିହ୍ନିବେ ଓ କହିବେ । 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣଟି ଶବ୍ଦର ଆଦ୍ୟରେ ମଧ୍ୟରେ ବା ଶେଷରେ କେମିତି ରହିଛି ତାହା ଶିକ୍ଷକ ବୁଝାଇବେ ।

ଶିକ୍ଷକ କଳାପଟାରେ ପ୍ରବେଶିକା ବହିର 'ଅ' ପଢ଼ାଇଲା ବେଳେ, 'ଅଡ଼ାଃ' ସହିତ ଅନ୍ୟ କେତୋଟି ଶବ୍ଦ ବି ଲେଖିବେ । ତା'ପରେ ପିଲାମାନଙ୍କଦ୍ୱାରା ଶବ୍ଦ ପଢ଼ିବା ଓ ବର୍ଣ୍ଣ ଚିହ୍ନିବା କାମ କରିବେ । ଯେହେତୁ ଶବ୍ଦସବୁ ପିଲାଙ୍କ ପରିଚିତ ପରିବେଶରୁ ଆସିଛି ଓ ପିଲାମାନେ ବହିରେ ସେହି ଚିତ୍ରକୁ ଦେଖି ଚିହ୍ନିବା ସହ କହିବାରେ ସକ୍ଷମ, ତାକୁ ପଢ଼ିବାରେ ସେମାନେ ସହଜ ମନେ କରିବେ । ଅତଏବ, ଶିକ୍ଷକ ଶବ୍ଦଟିଏ ଲେଖି ତା'ର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଅକ୍ଷରକୁ ଅଲଗା ଅଲଗା ପଢ଼ିବାକୁ କହିବେ । ତା'ପରେ ଅକ୍ଷରକୁ ଯୋଡ଼ି ପୂରା ଶବ୍ଦଟିକୁ ପଢ଼ିବାକୁ କହିବେ । ଏଥିରେ ପିଲାର ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ, ଶବ୍ଦ ପରିଚୟ ଓ ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ ହେବ । ଶବ୍ଦଟିକୁ ଜଣେ ପିଲା ପଢ଼ିଲା ବେଳେ ଅନ୍ୟ ପିଲାମାନେ ବି ତାଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ସେହି ଶବ୍ଦକୁ ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବେ । ଏହା ମିଳିତ ପଠନ ।

ଲିଖନ : ଶିକ୍ଷକ ପ୍ରଥମେ ପିଲାଙ୍କୁ 'ଅଡ଼ାଃ' ଶବ୍ଦର 'ଅ' ଲେଖିବା ଶିଖାଇବେ । 'ଅ' ବାମରୁ ଡାହାଣକୁ କେମିତି ଲେଖିବେ ତାହା ଶିକ୍ଷକ କରିବେ । ଏହା ସହାୟକ ଲିଖନ । ତା'ପରେ ପିଲା ବହିରେ ଥିବା ଖାଲି ଜାଗାରେ ଉପରେ ଥିବା 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣ ଦେଖି ନିଜେ 'ଅ' ଲେଖିବେ । ପିଲାଏ ଲେଖିଲାବେଳେ ଓ ପଢ଼ିଲାବେଳେ ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ସହାୟତା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆବଶ୍ୟକ ।

ପ୍ରତ୍ୟେକ ପୃଷ୍ଠାରେ ପିଲାଙ୍କ ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ ପାଇଁ ଦୁଇ ତିନି ଧାଡ଼ିରେ ଗୀତ ବା ବାକ୍ୟ ଦିଆଯାଇଛି । ଶିକ୍ଷକ ସେସବୁକୁ ଗାଇ ବା ପଢ଼ି ପିଲାଙ୍କ ସଙ୍ଗେ ଆଲୋଚନା କରିବେ । ସ୍କୁଲ ଲାଇବ୍ରେରୀରୁ ଶିଶୁ କାହାଣୀ ବହି ନେଇ ମଧ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ଭାଷାରେ କାହାଣୀ କହି ଆଲୋଚନା କରିପାରିବେ । ମନେରଖିବେ, ପ୍ରାଥମିକ ଶ୍ରେଣୀର ପିଲାଙ୍କ ସଙ୍ଗେ ମାତୃଭାଷାରେ କାହାଣୀ, ଗୀତ ଆଦି କହି କଥା ହେବା ଆବଶ୍ୟକ । ପୁସ୍ତକରେ ଯେତିକି ଶବ୍ଦ ଦିଆଯାଇଛି ତାହା ସାକ୍ଷରତାର ନମୁନା ମାତ୍ର । ପିଲାଏ ଏଭଳି ଶହ ଶହ ଶବ୍ଦ ଜାଣିଥାନ୍ତି । ସେମାନଙ୍କୁ ଗୋଟିଏ ବର୍ଣ୍ଣ ଥାଇ ଶବ୍ଦ ପଚାରିଲେ ଅନେକ ଶବ୍ଦ କହିପାରିବେ । ଉଦାହରଣ ସ୍ୱରୂପ, ଶିକ୍ଷକ 'କ'ରେ ଆରମ୍ଭ ହେଉଥିବା କେତେକ ଶବ୍ଦ କହିବା ପାଇଁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ପଚାରିପାରିବେ ।

ପିଲାଙ୍କ ସୁବିଧା ପାଇଁ ପ୍ରଥମେ ମୁଣ୍ଡା ଭାଷାରେ ଥିବା ବର୍ଣ୍ଣମାଳାରୁ ଗୀତ, ଶବ୍ଦ, ଅକ୍ଷର ଦିଆଯାଇଛି । ଏହା ଶିଖାଇଲା ବେଳେ ପିଲାଏ ଓଡ଼ିଆ ଧ୍ୱନି ଓ ଲିପି ନିଜ ମାତୃଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଶିଖିପାରିବେ । ଏହି ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକରେ ଦୀର୍ଘ ଉଚ୍ଚାରଣ ପାଇଁ ଏକ ଅତିରିକ୍ତ ଚିହ୍ନ (') ଦିଆଯାଇଛି । ଏଥିପାଇଁ, ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଭାବେ ଶବ୍ଦ ମଧ୍ୟ ଶେଷରେ ଦିଆଯାଇଛି । ଏହାର ଉଚ୍ଚାରଣ ଅଣମୁଣ୍ଡା ଭାଷାଭାଷୀ ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ପାଇଁ ଅସୁବିଧା ହୋଇପାରେ । ତେବେ, ଏହି ପୁସ୍ତକରେ ଦିଆଯାଇଥିବା ଚିତ୍ରଗୁଡ଼ିକ ଯେହେତୁ ମୁଣ୍ଡା ଭାଷାଭାଷୀଙ୍କ ପରିବେଶରୁ ଆସିଛି । ଚିତ୍ର ଦେଖି ପିଲାମାନେ ତାହା ସହଜରେ କହିପାରିବେ । ଅତଏବ, ଉଚ୍ଚାରଣରେ କୌଣସି ଭୁଲ ନହେବା ଆଶା କରାଯାଏ । ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ ଏଥିପ୍ରତି ଧ୍ୟାନଦେବେ, ମୁଣ୍ଡା ଭାଷାଭାଷୀ ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀଙ୍କ ସହଯୋଗ ବି ନେଇପାରିବେ । ମୁଣ୍ଡାରେ ଓଡ଼ିଆର ସବୁ ବର୍ଣ୍ଣ ନାହିଁ । ତେଣୁ ଏହି ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକର ଶେଷରେ ଓଡ଼ିଆର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା ଦିଆଯାଇଛି । ମୁଣ୍ଡା ଭାଷାରେ ବ୍ୟବହୃତ ହେଉନଥିବା ଓଡ଼ିଆ ଅକ୍ଷରଗୁଡ଼ିକ ବିଷୟରେ ପିଲାମାନେ ଏଥିରୁ ଜାଣିପାରିବେ । ସେହିପରି, ସଂଖ୍ୟା ଗଣନା ଓ ଅଭ୍ୟାସ ପାଇଁ ଏକରୁ କୋଡ଼ିଏ ଯାଏଁ ସଂଖ୍ୟା ମଧ୍ୟ ଦିଆଯାଇଛି ।

ମୌଳିକ ସାକ୍ଷରତା ଉପରେ ରାଜ୍ୟରେ ସ୍କୁଲଗୁଡ଼ିକୁ ଯୋଗାଯାଇଥିବା ଶିକ୍ଷକ ସହାୟକ ପୁସ୍ତକରୁ ଆପଣମାନେ ବିଶେଷ ଭାବରେ ଜାଣିପାରିବେ।

ତଳେ ଦିଆଯାଇଥିବା ରେଖାଗୁଡ଼ିକୁ ଦେଖି ଚିହ୍ନିତ ସ୍ଥାନରେ ସେହିଭଳି ରେଖା କରନ୍ତୁ:

ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱଗ ରେଖା :

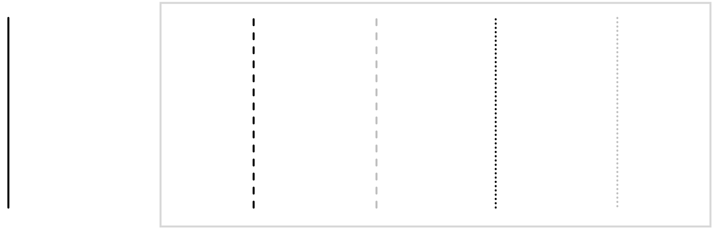

ଶାୟିତ ରେଖା :

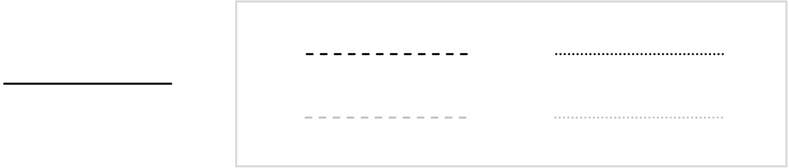

ତେରଛା ରେଖା ୧ :

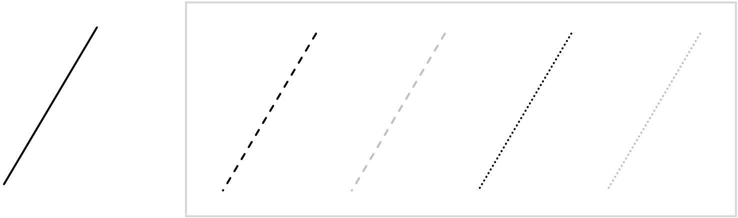

ତେରଛା ରେଖା ୨ :

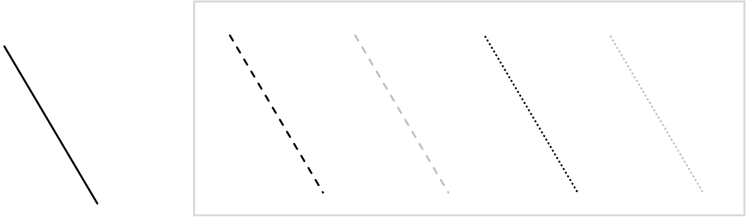

ବକ୍ର ରେଖା ୧ :

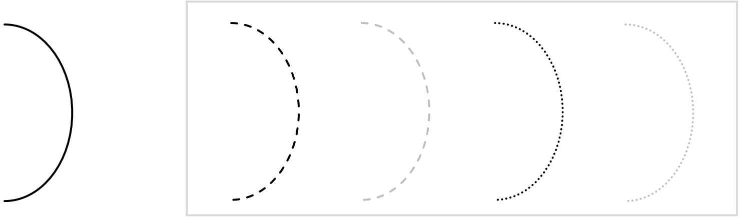

ବକ୍ର ରେଖା ୨ :

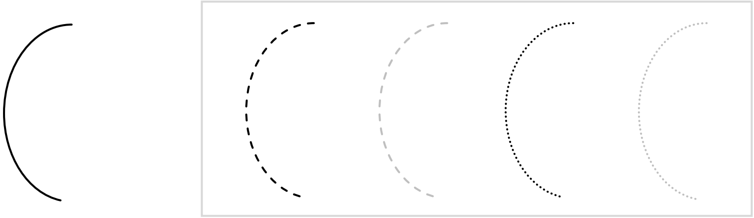

ଟିପଣୀ: ଶିକ୍ଷକ ପେନସିଲ ଧରି ଉପରେ ଦିଆଯାଇଥିବା ଚିହ୍ନିତ ସ୍ଥାନରେ କିପରି ରେଖା ଟାଣିବେ ତାହା ପିଲାଙ୍କୁ ଶିଖାଇବେ ।

ମୁଣ୍ଡା ବର୍ଣ୍ଣମାଳା

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	ଏ	ଓ
ମାତ୍ରା	◌ା	◌ି	◌ୀ	◌ୁ	◌ୂ	େ◌	◌ୋ

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

କ	ଖ	ଗ	ଚ
ଜ	ଟ	ଠ	ଡ
ଢ	ଣ	ତ	ଦ
ଧ	ନ	ପ	ବ
ମ	ର	ଳ	ସ
ହ	ୟ	◌ଂ	◌ଃ
◌ଁ			

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ

ଡ଼

ଅତିରିକ୍ତ ଚିହ୍ନ	
ହଳନ୍ତ (ସ୍ୱର ଲୋପ ପାଇଁ)	◌୍
ଦୀର୍ଘ ଉଚ୍ଚାରଣ ପାଇଁ	’

ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା (ଯାହା ମୁଣ୍ଡାରେ ନାହିଁ)

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

	ଋ	ଐ	ଔ	
ମାତ୍ରା	◌ୃ	◌ୈ	◌ୌ	

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

ଘ	ଙ	ଛ
ଝ	ଞ	ଥ
ଫ	ଭ	ଯ
ଳ	ୱ	ଶ
ଷ	କ୍ଷ	

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ

ଢ଼

ଅ

ଅଡ଼ାଃ

ଘର

ଅଡ଼ାଃ ହାସାତେ ବାଇଆ,
ଏନତାଃରେ ଆବୁ ତାଇନା ।।

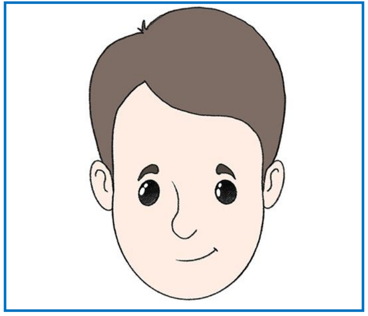

ଅତେ	ଗେର୍ଅଆଁ	ବଅଃ
ମାଟି	ଘରଚଟିଆ	ମୁଣ୍ଡ

ଅ ଅ ଅ

ଆ

ଆରିଲ୍

କୁଆପଥର

ସିରମାଏତେ ଆରିଲ୍ ଇଉଗଃତାନା,
ସିଟିଆକୋ ଏନାକେ ଜମେଃତାନା ।।

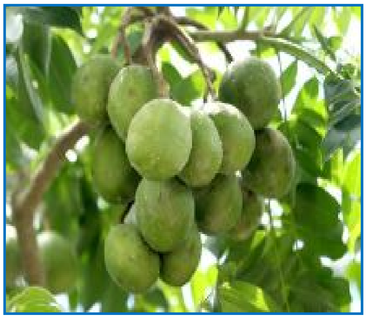	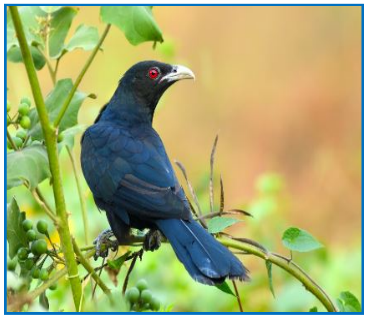	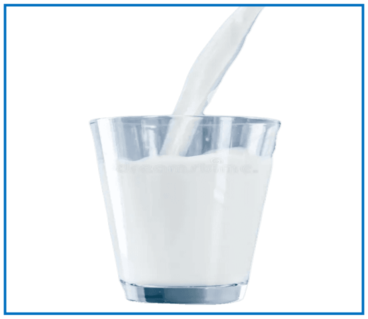
ଆମବୁଡୁ	ତଆଉ	ତଆ
ଆମ୍ବଡ଼ା	କୋଇଲି	କ୍ଷୀର

ଆ ଆ ଆ

ଈ

ଈପିଲ

ତାରା

ସିରିମାରେ ଈପିଲକୋ ଜୁଲଃତାନା,
ଈସୁ ସୁଗାଡ଼କୋ ନେଲଃତାନା ।।

ଈଚାଃ	ଦାଈଲ୍	ହାଈ
ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି	ଡାଲି	ଚୁନାମାଛ

ଈ ଈ ଈ

ଛ

ଛଡୁନିଃ

ଶିକ୍ଷକ

ଛଡୁନିଃ କାହାନୀ କାଜିତାନା,
ହନକୋ ଏନାକେ ଆନ୍ଧୁମତାନା ।।

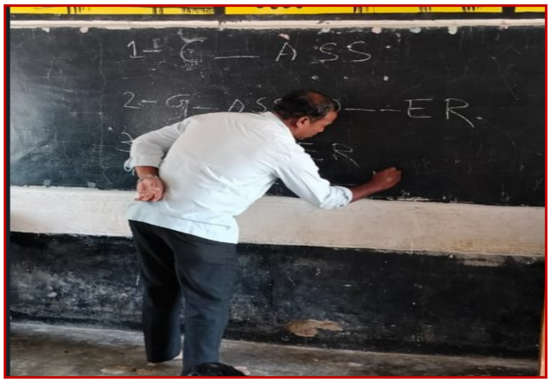

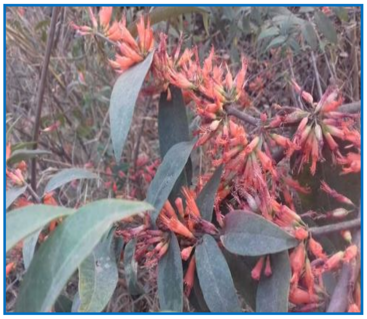

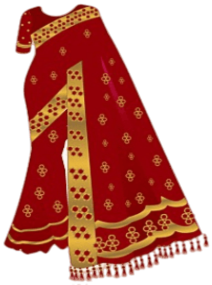

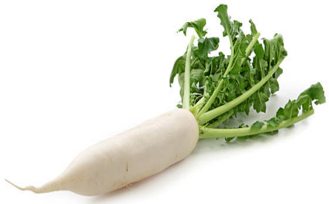

ଛଚାଃବାହା	ଲିଛଜା	ମରାଛ
ସିନ୍ଦୁରୀ	ଶାଢ଼ି	ମୂଳା

ଛ ଛ ଛ

ଉ

ଉଲି

ଆମ୍ବ

ଜେଟେ ସିଂଗିରେ ମାତାଅଆ ଉଲି,
ସିଟିଆକୋ ହାଲାଂଗା ଥାଇଲି ଥାଇଲି ।।

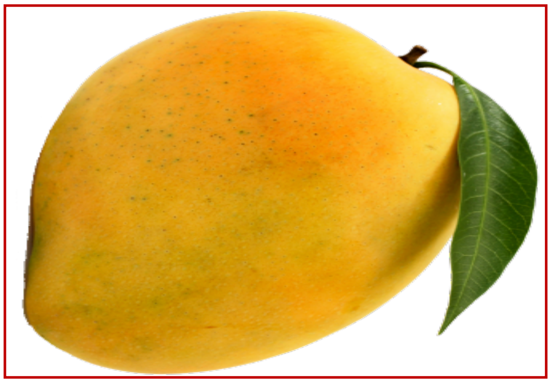

ଉଦ୍	ଲାଉକି	ହାଉ
ଛତୁ	ଲାଉ	କାଇ

ଉ ଉ ଉ

ଉ

ଉବ୍

କେଶ

ଉବ୍ ବିତାରେ ସିକୁକୋ ହବାନା,
ଏନା ମେନତେ ସାପା ବୁ ଡାଇନା ।।

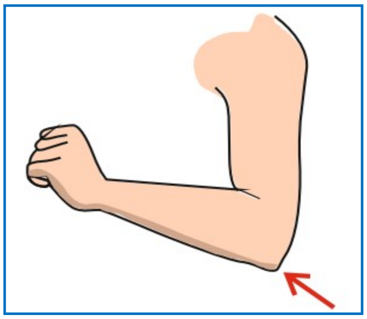

ଉତୁ	ଉକା	ଉମ୍ବୁଲ
ତରକାରି	କହୁଣି	ଛାଇ

ଉ ଉ ଉ

ଏ

ଏଦେଲ୍

ଶିମୁଳି

ଏଦେଲ୍ ବାହାରେ ଲେଲେକୋ
ଦୁବାକାନା,
ବାହାଏତେ ହୁରୁମ୍‌ସୁକୁ ରାସି ନୁ ତାନା ।।

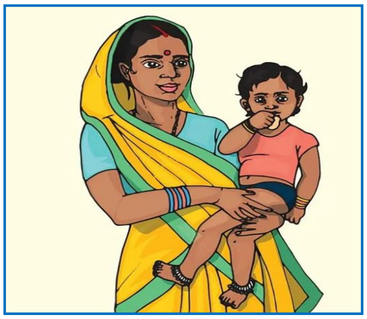

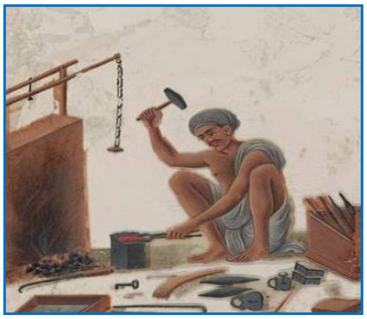

ଏଂଗା	କାଏଥା	ବାଡାଏ
ମା	ଛଚିନ୍ଦ୍ରା	କମାର

ଏ ଏ ଏ

ଓ

ଓରାଲ୍

କଳାଗୁଣ୍ଡୁଚି

ହେଂଦେ ନିଦା ହବାଃ ଜାନା,
ଓରାଲ୍ ବୁଡି ଅଡଂ ଜାନା ।।

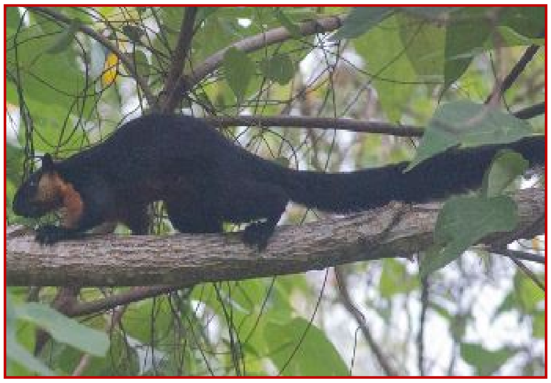

ଓଲା	କେଓରା	କଓ
ନୀଡ଼	ଧୁତୁରା	ବଗ

ଓ ଓ ଓ

କ

କକର୍

ପେଚା

ସିଂଗି ହାସୁର ଜାନା,
କକର୍ ଅଡଂ ଜାନା ।।

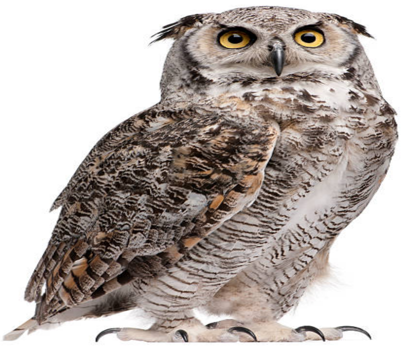

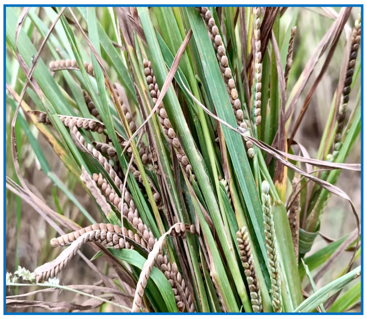

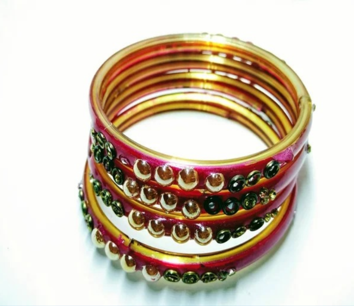

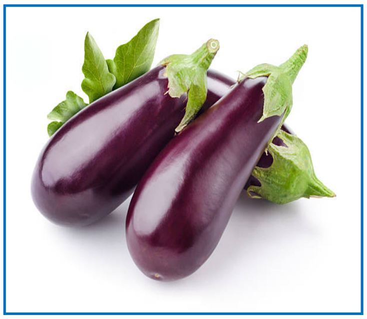

କଦେ	ସାକମ୍	ଟକ
କୋଦୋ	ଚୁଡ଼ି	ବାଇଗଣ

କ	କ	କ	

ଖ

ଖର୍ପା

ଚପଲ

ଏଂଗାତେ ଖର୍ପା ଆଉକେଦାଏ,
ହନ୍ ରାସିକାତେ ତୁସିଂକେଦାଏ ।।

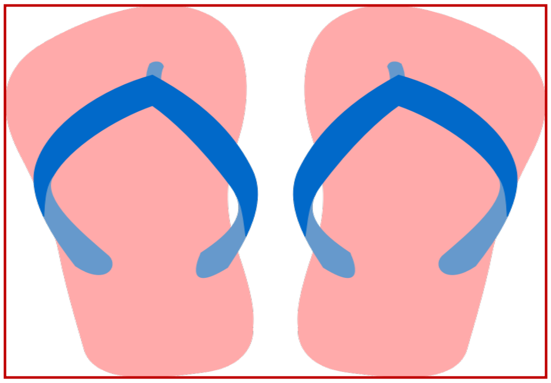

ଖାପରା	ପୋଖରା	ଚମ୍ଖା
ଖପର	ପୋଖରୀ	ଚୁଖା

ଖ ଖ ଖ

ଗ

ଗଗ୍ରା

ଗରା

ଗଗ୍ରାରେ ଦାଆଃ ତାଇନା,
ହିଜୁକେତେ ଗାଦିନାଏ ମାଏନା ।।

ଗାନ୍ତା	ଗୁଲଗୁଦିରି	ପାଲାଗ୍
ଟୋକେଇ	ଶିଳପୁଆ	ପାଳଙ୍ଗ

ଗ ଗ ଗ

ଚ

ଚରଚଟ

ଝର

ଚରଚଟଏତେ ଦାଃଆ ଲିଂଗିତାନା,
ରାସିକାତେ ହାଇକୋ ଇନୁଂତାନା ।।

ଚକେ	ଗଚଇ	ମାଚା
ବେଙ୍ଗ	ଚମୖଇନେଉଳ	ପାଳଭାଡ଼ି

ଚ ଚ ଚ

ଜ

ଜରନା

ମକା

ଜାର୍ଗିରେ ଜରନା ଜୋଃଆ,
ସିଟିଆକୋ ରାପା ଜମେଆ ।।

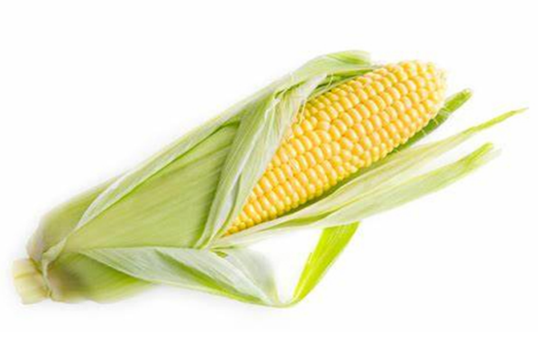

ଜାର୍ଗି	ସାର୍ଜମ୍	ଜଜ
ବର୍ଷା	ଶାଳ	ତେନ୍ତୁଳି

ଜ ଜ ଜ

ଟ

ଟନମ୍

ଗଣ୍ଠି

ଲିଜାଃତେ ଟନମ୍,
ସାକାମ୍‌ତେ ପଟମ୍ ।।

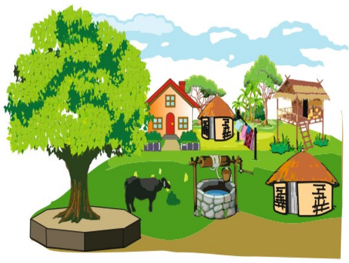

ଟୋଲା	କାଟକମ୍	କେର୍‌କେଟା
ଗାଁ	କଙ୍କଡ଼ା	କାଠହଣା

ଟ ଟ ଟ

ଠ

ଠର୍

ଥଣ୍ଟ

ଚେଣେକୋ ଠର୍ତେ ଜଜମାକୋ,
ଅଡ଼େ ଆପରବ୍ତେ ଆପିର୍ଆକୋ ।।

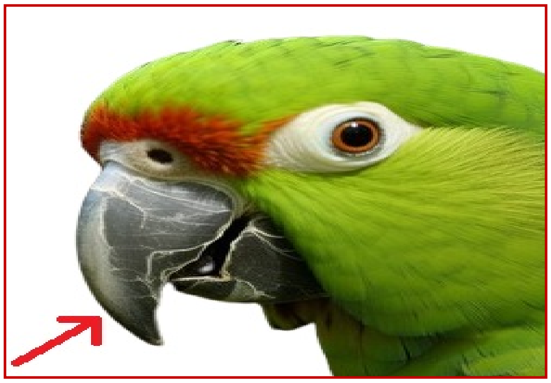

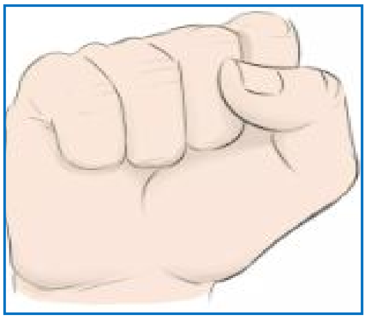

ଠଠ୍ରା	ପାଠିଆ	ମୁଠ୍
କବାଟ	ମାଈଛେଳି	ମୁଠା

ଠ ଠ ଠ

ଡ

ଡଲା

ଟୋଳ

ଅଡ଼େ ଦାରୁ କତରେ ଦୁବା କାନାଏ,
ମାତା ଡଲାକେ ସଦା ଜମତାନାଏ ।।

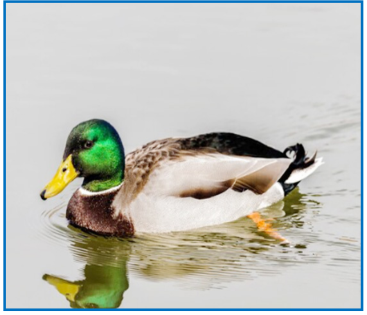

ଡମ୍ବା	ଡଡ୍କା	କଡ
ବାତାପି	ତରଡ଼ା	ବତକ

ଡ ଡ ଡ

ଢ

ଢଢ୍ରୋ

କୋରଡ଼

ମିଆଦ୍ ଦାରୁରେ ଢଢ୍ରୋ ମେନାଃ,
ଏନ୍ତାଃରେ ମାଏନା ବାସା ତାନାଃ ।।

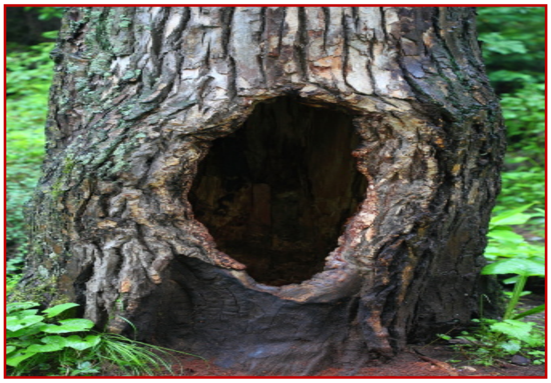

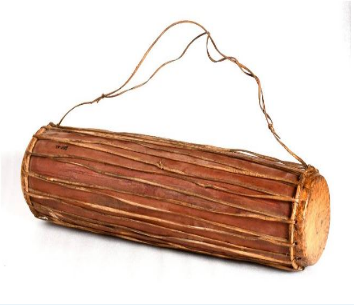

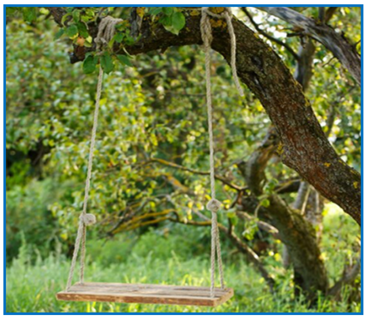

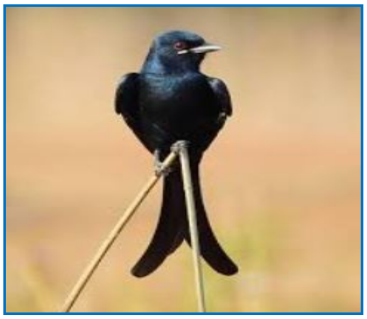

ଢୋଲ୍କି	ଢେଲୁଆ	ଢେଚୁଆ
ଢୋଲ	ଦୋଳି	କଜ୍ଜଳପାତି

ଢ ଢ ଢ

ଣ

ଗଣାଁ

ଗୁହାଳ

ଗଣାଁରେ ଉରିଃ ମେରମ୍,
ବୁରୁରେ ସିଲିବ୍ ସାରମ୍ ।।

ମସଣା	ବାଣ୍ସି	ମଣାଁ
ଚଟେଇ	ବନଶୀ	ଓଳିଆ

ଣ ଣ ଣ

ତ

ତସଦ୍

ଘାସ

ଆଡ଼ିରେ ତସଦ୍ ଜାବରାକାନା,
ହନ୍ କୁଲାଇ ଆତିଂତାନା ।।

ତାବେନ୍	କର୍ତାଲ	କତ
ଚୁଡ଼ା	ରାମକାଠି	ଡାଳ

ତ ତ ତ

ଦ

ଦଦାଡ଼ି

ବରକୋଳି

ଦଦାଡ଼ି ଦାରୁରେ ମାତାକାନା,
ହନ୍‌କୋ ଜମେତେ ସେନ୍‌ତାନା ।।

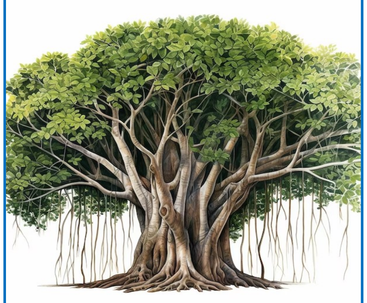		
ଦାରୁ	କଦଲ୍	କୁଦା
ଗଛ	କଦଳୀ	ଜାମୁକୋଳି

ଦ	ଦ	ଦ	

ଧ

ଧର୍ପା

ମୂଷାଯନ୍ତା

ଧର୍ପାରେ ହୁନି ବଲଜାନାଏ,
ବିଲେଇ ଦୋ ବେଦାଜାନାଏ ।।

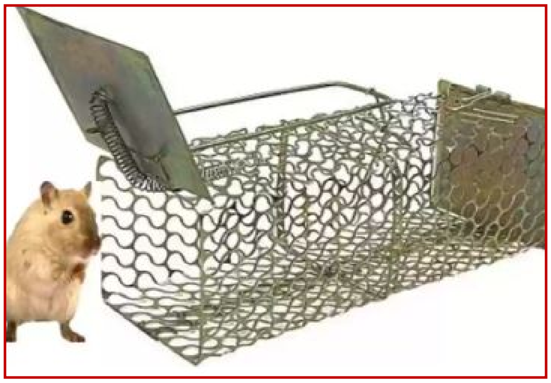

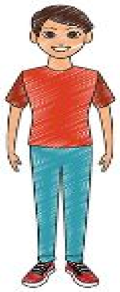		
ଧଂଗଡ଼ା	ଧୁଆଂଗ୍	ଧାମଣା
ଯୁବକ	ଝୁଣା	ଦୀପ

ଧ	ଧ	ଧ	

ନ

ନଗ୍ରା

ନାଗରା

ନଗ୍ରା ସାଡ଼ିଆ ଢୁଂ ଢୁଂ,
ସିଟିଆ ସୁସୁନା ଧୁମ୍ ଧୁମ୍ ।।

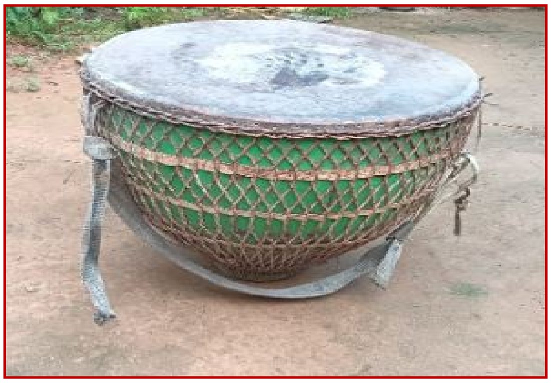

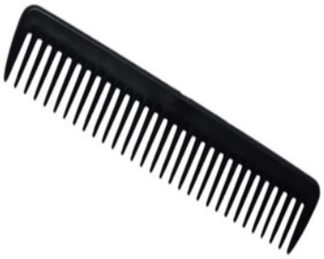	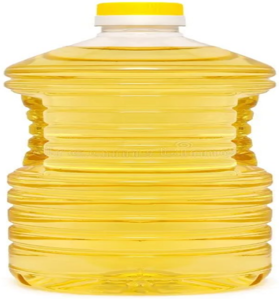	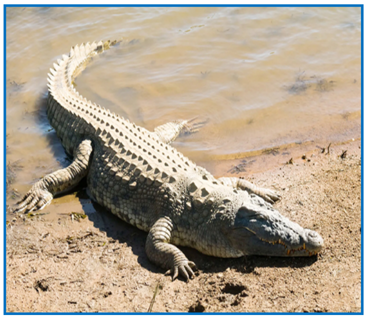
ନାକିଃ	ସୁନୁମ୍	ଡାଇଆନ୍
ପାନିଆ	ତେଲ	କୁମ୍ଭୀର

ନ ନ ନ

ପ

ପର୍କମ୍

ଖଟ

ସିଟିଆ ପରକମ୍‌ରେ ଇନୁଂତାନାଏ,
ସେତା ଲାତାର୍‌ରେ ଦୁବାକାନାଏ ।।

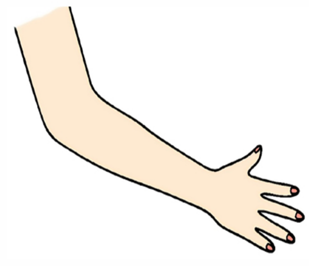

ପୁତାମ୍	ଇପିଲ୍‌ପିଉ	ସୁପୁ
କପୋତ	ଜୁଲୁଜୁଲିଆ ପୋକ	ହାତ

ପ ପ ପ

ବ

ବନମ୍

କେନ୍ଦରା

ଆସିଜମ୍‌ନିଃ ବନମ୍ ସାଡ଼ିତାନାଏ,
ହନ୍ ଆନ୍ଜୁମତେ ସେନ୍‌ତାନାଏ ।।

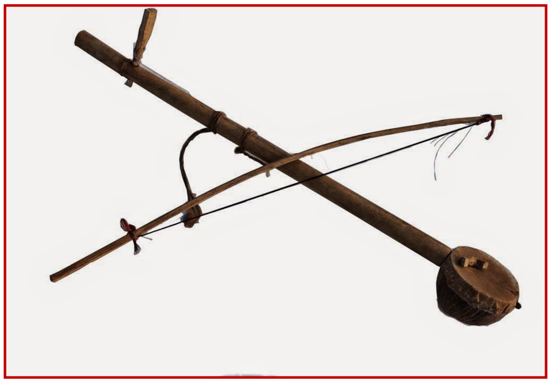

ବୁନୁମ୍

ଉଇହୁଙ୍କା

ବିନ୍‌ଦିରାମ୍

ବୁଡ଼ିଆଣୀ

ସିଲିବ୍

କୁଟ୍ରା

ବ ବ ବ

ମ

ମଦ୍

ବାଉଁଶ

ହେଲ୍ତା ଉଠୁ ଦ ଜଜଆ,
ଏନା ମଦ୍ତେ ବାଇଆ ।।

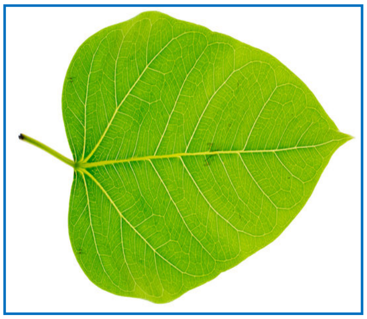

ମେରାଲ୍	ହୁରୁମ୍ସୁକୁ	ସାକାମ୍
ଅଅଁଳା	ମହୁ	ପତ୍ର

ମ ମ ମ

ର

ରନୁ

ଔଷଧ

ହାସୁ ଦୁକୁରେ ରନୁବୁ ଜମେଆ,
ବୁଗିନଃଆ ହଡ଼ମ ଆବୁଆଃ ।।

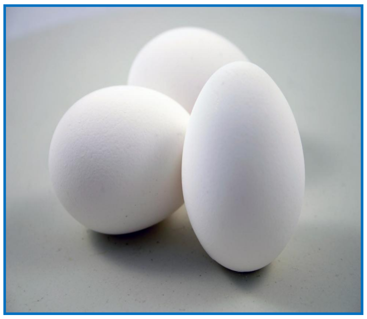

ରକ	ଜାରମ୍	ବିର୍
ମାଛି	ଅଣ୍ଡା	ଜଙ୍ଗଲ

ର ର ର

ସ

ସରଲ୍

ସୁରେଇ

ହାସାତେ ସରଲ୍ ବାଇଆକୋ,
କିରିଂତେ କୁଂକାଲତା ସେନାକୋ ।।

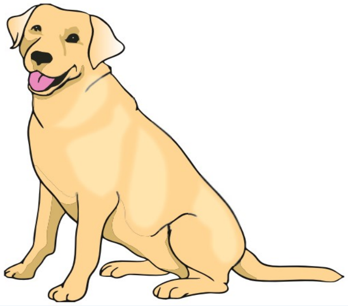	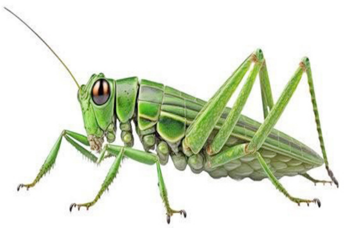	
ସେତା	ସଂସରଦ୍	ସସ
କୁକୁର	ଝିଣ୍ଟିକା	ଭେଲୁଆ

ସ ସ ସ

ହ

ହରା

ରାସ୍ତା

ହାସାରାଃ ହରା ବାଇକାନା,
ଉରିକୋ ହରାରେ ହିଜୁଃତାନା ।।

ହଲଂ	ତୁହୁଡ଼୍	ଦହା
ପିଠା	ଗୁଣ୍ଡୁଚିମୂଷା	ମହୁଫେଣା

ହ ହ ହ

ଯ

ବଯ

ଛୋଟ ପିଲା

ବଯ ଇନୁଂତାନା ବଖାଡ଼ିରେ,
ମାରାଃ ସୁସୁନ୍‌ତାନା ବୁରୁରେ ।।

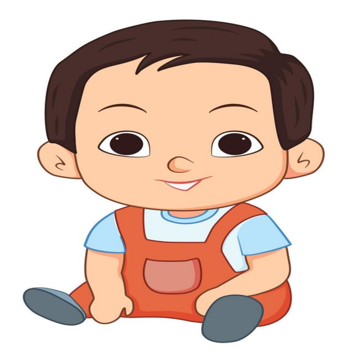

ବାଯାର୍	ତାଯାର୍	ତୁଯୁ
ଦଉଡ଼ି	କାକୁଡ଼ି	ବିଲୁଆ

ଯ ଯ ଯ

ଲ

ଲଆ

ଡିମ୍ବିରି

ଲଆ ମାତାରେ ଆରାଃଗି ନେଲଆ,
ଜମେଲାଗି ଚେଣେକୋ ହିଜୁଃଆ ।।

ଲୁର୍‌କୁଟିଃ	ମାଲାନ୍	ଡିରିଲ୍
ଇନ୍ଦ୍ରଧନୁ	ଶିମ୍ବ	କେନ୍ଦୁ

ଲ ଲ ଲ

ଡ଼

ଗୁହୁଡ଼

ଗୁଡ଼

ଗୁହୁଡ଼ ହଲଂ ବାଇଆକୋ,
ରାସିକା ତେ ଜଜମାକୋ ।।

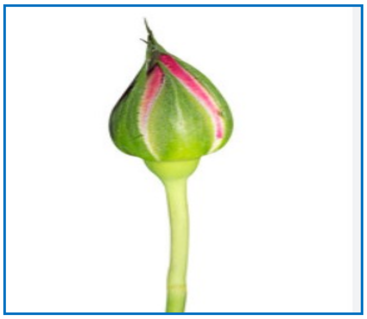

ରାହାଡ଼ି	ପିଡ଼ି	କୋଡ଼ି
ହରଡ଼	ପଡ଼ିଆ	କଢ଼ି

ଡ଼ ଡ଼ ଡ଼

ବର୍ଣ୍ଣ	ମାତ୍ରା / ଚିହ୍ନ	ଉଦାହରଣ	ଉଦାହରଣ
ଅ		ହର	ଜନ
		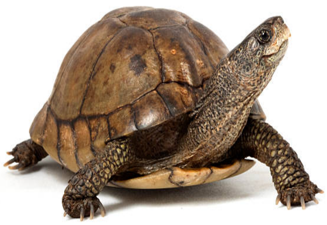	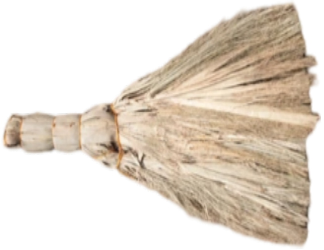
ଆ	◌ା	କାରାଏଲା	ଟାକା
		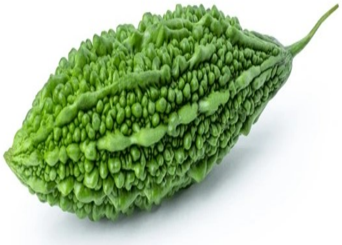	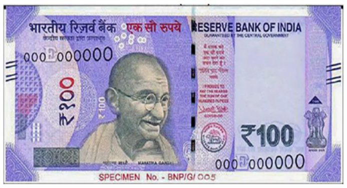
ଇ	◌ି	ଗିରିଣି	ଡିକି
		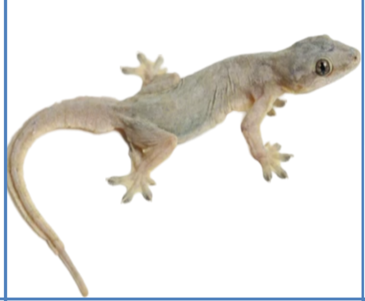	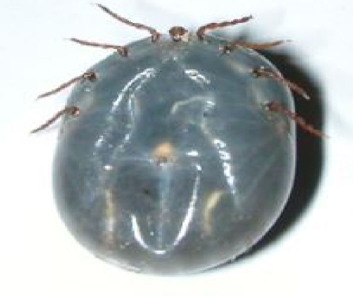
ଈ	◌ୀ	କୁମନୀ	ବା'ଗୋବୀ
		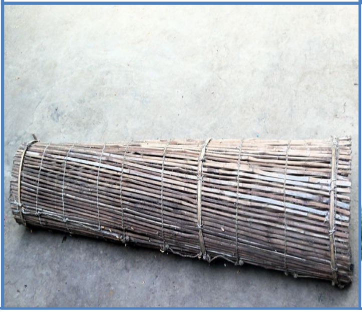	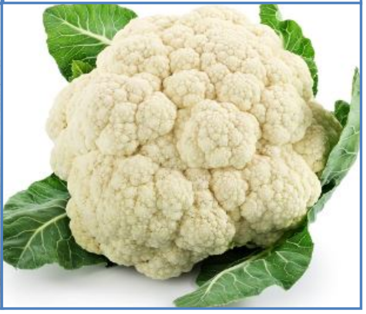

ବର୍ଣ୍ଣ	ମାତ୍ରା / ଚିହ୍ନ	ଉଦାହରଣ	ଉଦାହରଣ
ଉ	◌ୁ	ଚୁଟୁ	ଡୁଲୁ
		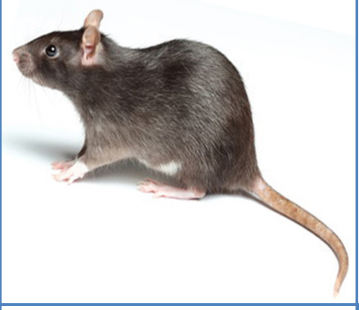	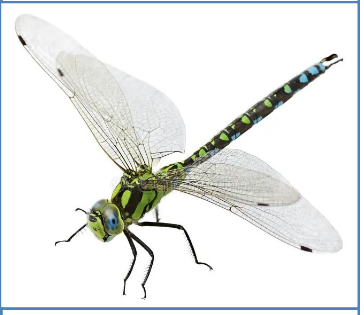
ଊ	◌ୂ	ସୂଦ୍	ଚୂକା
		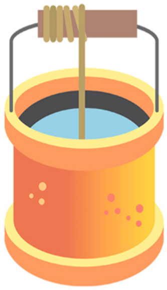	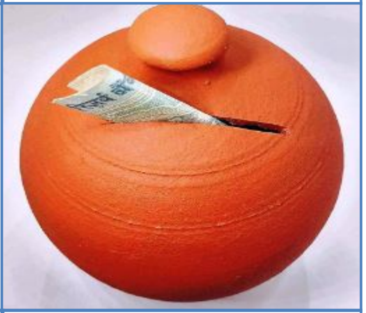
ଏ	◌େ	ଟେଟେଂଗା	ଲେଂଡାଦ୍
		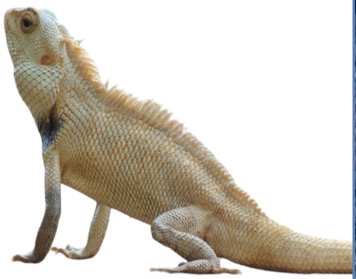	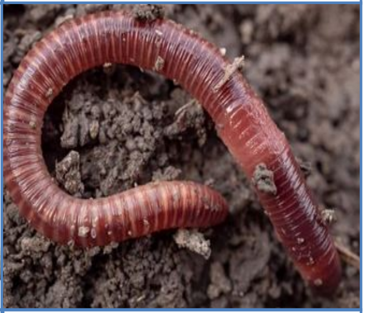
ଓ	◌ୋ	ଅବୋରସାଂଗା	ଜୋକି
		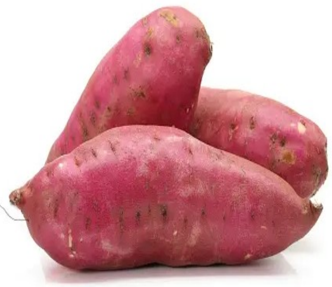	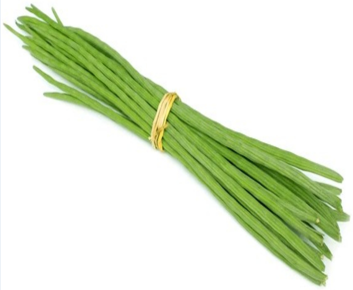

ବର୍ଣ୍ଣ	ମାତ୍ରା / ଚିହ୍ନ	ଉଦାହରଣ	ଉଦାହରଣ
ଅନୁସ୍ୱାର	◌ଂ	ସିଂଗି	ଚାଂଡୁ
		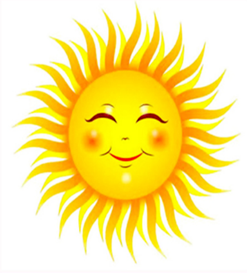	
ବିସର୍ଗ	◌ଃ	ସାରାଃ	ହାଟାଃ
ଚନ୍ଦ୍ରବିନ୍ଦୁ	◌ଁ	ଆଁକଲ	ମିଡଁ
ହଲନ୍ତ	◌୍	ଇଲ୍	ମାର୍ମାର୍

ବର୍ଣ୍ଣ	ମାତ୍ରା /ଚିହ୍ନ	ଉଦାହରଣ	ଉଦାହରଣ
ଦୀର୍ଘସ୍ୱର	’	ଚା’ତମ୍	ଜା’ଲମ୍
		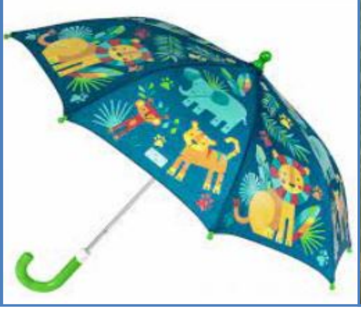	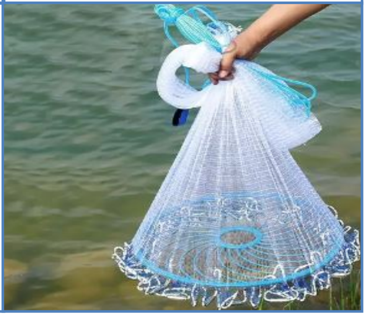

ଲେକା			
୧	ମିଆଦ୍	ଏକ	
୨	ବାରିଆ	ଦୁଇ	
୩	ଆପିଆ	ତିନି	
୪	ଉପୁନିଆ	ଚାରି	
୫	ମଣେଆ	ପାଞ୍ଚ	
୬	ତୁରିଆ	ଛଅ	
୭	ଏଆ	ସାତ	
୮	ଇରିଲିଆ	ଆଠ	
୯	ଆରିଆ	ନଅ	
୧୦	ଗେଲେଆ	ଦଶ	
୧୧	ଗେଲ୍‌ମିଆଦ୍	ଏଗାର	
୧୨	ଗେଲ୍‌ବାରିଆ	ବାର	
୧୩	ଗେଲ୍‌ଆପିଆ	ତେର	

୧୪	ଗେଲ୍ଉପୁନିଆ	ଚଉଦ	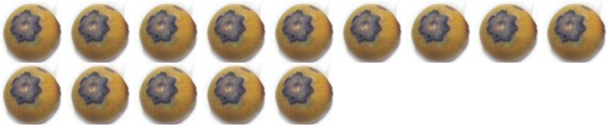
୧୫	ଗେଲ୍ମଣେଆ	ପନ୍ଦର	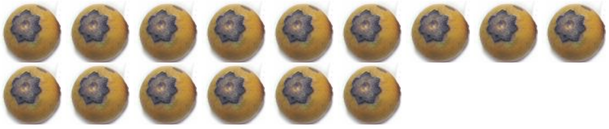
୧୬	ଗେଲ୍ତୁରିଆ	ଷୋହଳ	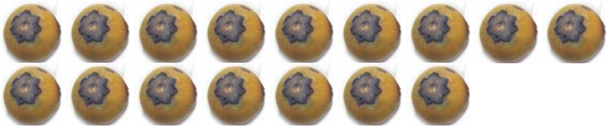
୧୭	ଗେଲ୍ଏଆ	ସତର	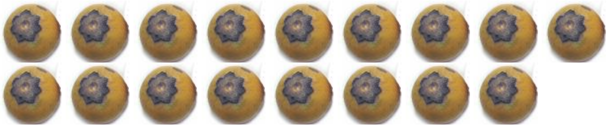
୧୮	ଗେଲ୍ଇରିଲିଆ	ଅଠର	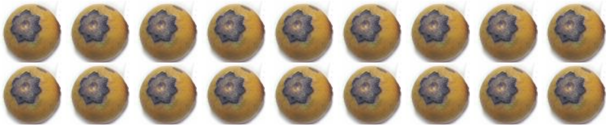
୧୯	ଗେଲ୍ଆରିଆ	ଉଣେଇଶି	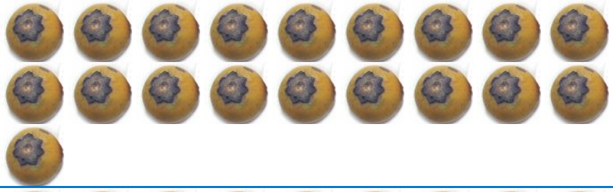
୨୦	ହିସି	କୋଡ଼ିଏ	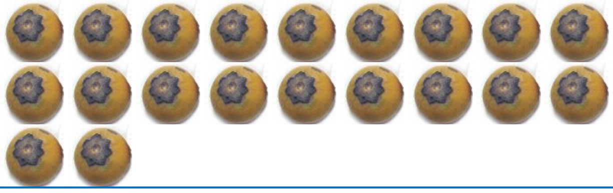

১	১	১	১	
২	২	২	২	
৩	৩	৩	৩	
৪	৪	৪	৪	
৫	৫	৫	৫	
৬	৬	৬	৬	
৭	৭	৭	৭	
৮	৮	৮	৮	
৯	৯	৯	৯	
১০	১০	১০	১০	

୧୧	୧୧	୧୧	୧୧	
୧୨	୧୨	୧୨	୧୨	
୧୩	୧୩	୧୩	୧୩	
୧୪	୧୪	୧୪	୧୪	
୧୫	୧୫	୧୫	୧୫	
୧୬	୧୬	୧୬	୧୬	
୧୭	୧୭	୧୭	୧୭	
୧୮	୧୮	୧୮	୧୮	
୧୯	୧୯	୧୯	୧୯	
୨୦	୨୦	୨୦	୨୦	

ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ						
ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	
ଋ	ଏ	ଐ	ଓ	ଔ		

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ						
କ	ଖ	ଗ	ଘ	ଙ		
ଚ	ଛ	ଜ	ଝ	ଞ		
ଟ	ଠ	ଡ	ଢ	ଣ		
ତ	ଥ	ଦ	ଧ	ନ		
ପ	ଫ	ବ	ଭ	ମ		
ଯ	ର	ଲ	ୱ	ଶ	ଷ	ସ
ହ	କ୍ଷ	ୟ	ଳ	◌ଂ	◌ଃ	◌ଁ

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ	
ଡ଼	ଢ଼

ଅତିରିକ୍ତ ଚିହ୍ନ	
ହଳନ୍ତ (ସ୍ୱର ଲୋପ ଚିହ୍ନ)	◌୍

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

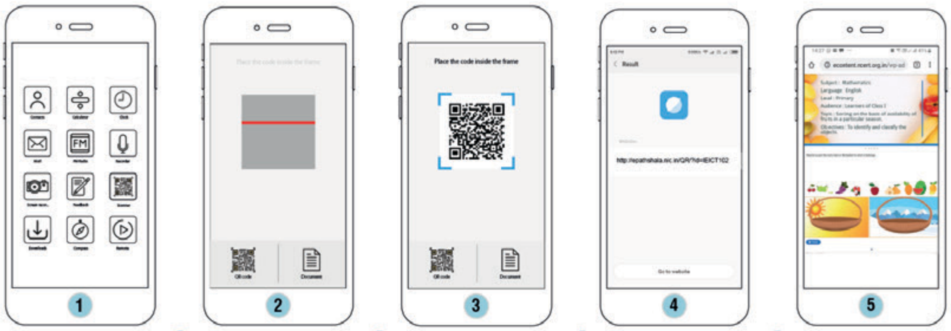

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

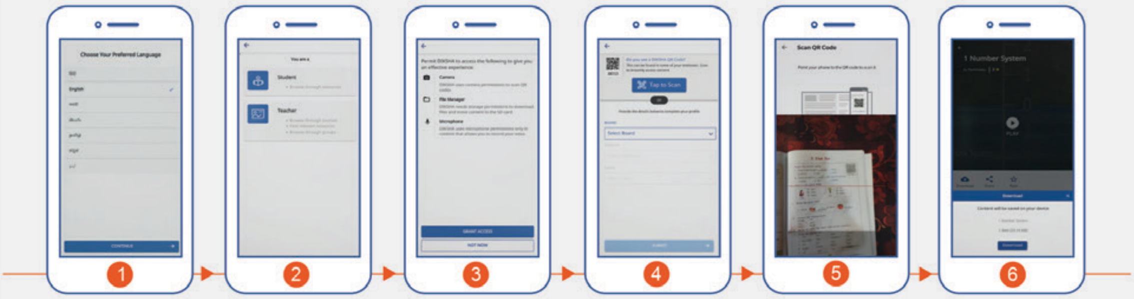

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SÜMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAON	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDESHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHALE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-III (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	BENGALI	85	GUJARATI	90	KORWA	95	MARATHI	100	ODIA
81	BHILI	86	KANDHA (KONDH)	91	LAHAULI	96	MARING	101	PARJI (DURUA)
82	BISHNUPRIYA MANIPURI	87	KANNADA	92	MAITHILI	97	MONPA	102	PHOM
83	CAR NICOBARESE (PŪ)	88	KHASI	93	MALAYALAM	98	MUNDA	103	PUNJABI
84	DOGRI	89	KONKANI	94	MALTO	99	NANCOWRY (MÖÜT)	104	TELUGU

PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (18)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
105	BALTI	109	HINDI	113	PAITE	117	SINDHI	121	ZEME (ZEMI)
106	CHOKRI	110	KASHMIRI	114	SANGTAM	118	THADOU-KUKI	122	ZOU
107	GANGTE	111	KOKBOROK (TRIPURI)	115	SANSKRIT	119	URDU		
108	GONDI-TELUGU	112	LAI (PAWI)	116	SANTALI (JHARKHAND)	120	VAIPHEI		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in